RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

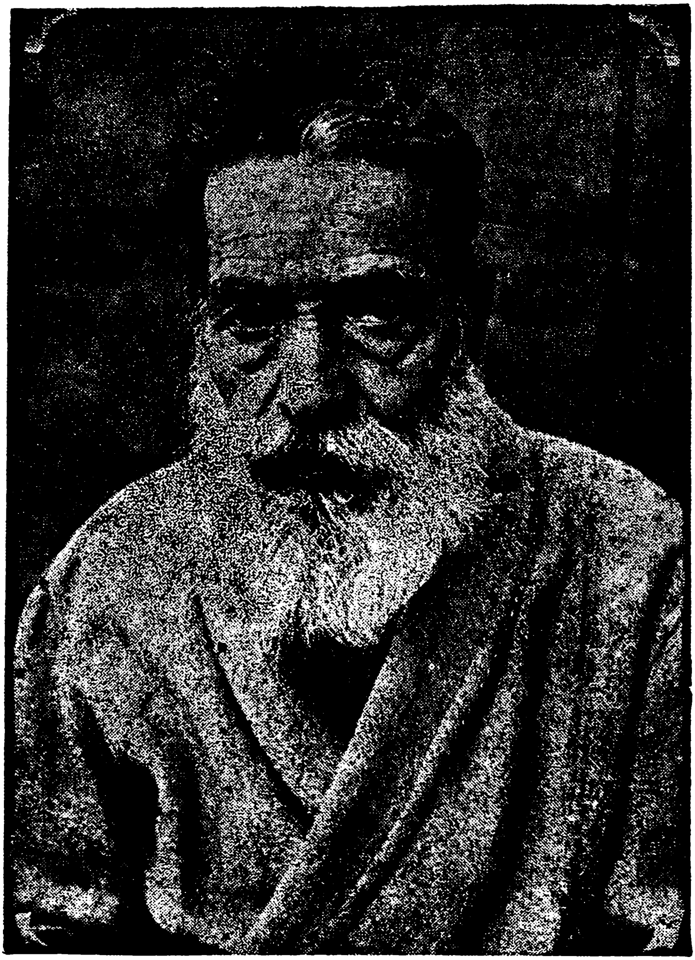

परमसन्त, परमदयाल
फकीर चन्द जी महाराज

[illegible]
[illegible]

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

मासिक—

मानव मन्दिर

सम्पादक :—एम. आर. भक्त
पी. एस. ई (रीटायर्ड)

वर्ष ६	शनीवार १० नवम्बर १९७९	संख्या ७

क्योंकि मेरी यह आदत है कि मैं रात को जागता हुआ भी जब खाली होता हूं और समय मिलता है तो प्रकाश और शब्द का ध्यान करता रहता हूं। मैं प्रकाश में सूर्य को देख रहा था। बाहर से दरवाजे का धमाका हुआ, वह मेरे कान में पड़ा और और सूर्य के टुकड़े हो गये। जो रौशनी मेरे मन या आत्मा ने बनाई हुई थी वह सब टुकड़े २ हो गई ! हम संसार के जितने धर्म पंथ और प्राणी हैं यह सब इस मन के चक्कर में फिरते हैं। यही खण्डन, कबीर साहिब, स्वामी जी और सन्तों ने किया। उस समय मैं ब्राह्मण और हिन्दु होने के नाते इन बाणियों को नहीं समझ सकता था और रोया करता था कि हे भगवन ! मैं तो तुझे मिलने निकला था, मैं कहां फंस गया। डी. ऐस. पी. D.S.P. साहिब, आप आये हैं, मैं आप लोगों को (Practical Life) क्रियात्मिक जीवन का सत्संग कराता हूं। अब जो धटना मेरे साथ हुई अगर किसी और के साथ होती तो वह चिन्ता करता और चकित होता कि सूर्य अन्तर फट गया है और धमाका हुआ है।

गुरुमत क्यों बड़ा है ? क्योंकि सारे मतमतान्तरं इस मन के झगड़े में पड़े हुये हैं। कवीर साहिव कहते हैं ।

मन को मारूं पटक कर, टूक टूक हो जाय।
विष की क्यारी बोय कर, लुनता क्यों पछताय।

वह कहते हैं कि इस मन को मैं मार दूँ, पटक दूँ और फेंक दू। क्यों ? क्योंकि विष की क्यारी बीजकर जब उसका फल चखूंगा तो मुझे पछताना पड़ेगा। यह मन ही हमारे सारे सुखों और दुखों का जिम्मेवांर है। दाता दयाल जी फरमाया करते थे कि 'जैसा ख्याल वैसा हाल' 'जैसी मति वैसी गती' 'जैसी करनी वैसी भरनी। मैं गुरुमत का क्यों हामी हुआ ? यह मामूली बात नहीं है। मैं जिस परिवार में पैदा हुआ वहां ईश्वर, परमेश्वर, बृह्म, पारबृह्म, सत इनकी पूजा करने का दस्तूर था और मैं कहां फँसा जहां इनका खण्डन था। दाता दयाल जिनको मैं राम का अवतार समझता था उन्होंने मेरे नाम पत्र लिखा है वह भी लिखते हैं :—

मैं नहीं राम कृष्ण का सेवक ईश व्रह्म नहीं जानूं
मैंफकीर का नाम दिवानासब से बढ़कर मानूं

जो फकीर मोहे दर्शन देवे अपना भाग्य सराहूँ
अपने तनके चाम की जूतीपग फकीर पहनाऊँ

वह कितने learned आदमी थे, वह वेद, पुरानों को जानते थे, उन्होंने पांच हज़ार कितावें लिखीं ऊपर वह लिखते हैं कि मैं ईश्वर, परमेश्वर वृह्म का सेवक नहीं हूं मैं केवल फकीर अर्थात गुरु साधू तथा संत का सेवक हूं। उस समय यह बात मेरी समझ में नहीं आती थी। अब मैं समझता हूं कि जो कुछ उन्होंने लिखा वह ठीक है: वह समझ मुझे किस प्रकार आई? कुछ समझ तो सत्संगियों के अनुभवों से आई कि जो कुछ किसी के अन्तर प्रकट होता है वो बाहर के प्रभाव अर्थात Suggestions and Impressions होते हैं जो तुम्हारे मस्तिष्क पर पड़ते हैं जैसे बाहर के धमाके का प्रभाव मेरे मस्तिष्क पर पड़ा। अगर मैं अज्ञानी होता तो इसके कई अर्थ लेता इस वास्ते संतों ने गुरु का दर्जा ईश्वर, परमेश्वर, परमात्मा, वृह्म, पारव्रह्म सबसे बड़ा रखा है और अब मेरी बुद्धि मानती है और निश्चय हो गया है कि जो कुछ इन संतों ने कहा है वह सोलह: आने सत है। संतों ने सबका खण्डन तो कर दिया मगर हम लोगों को उसका कारण

नहीं बताया। देखो! कबीर साहिब ने क्या कहा है:—

साधो यह मन बड़ा ज़ालिम
जा को मन से काम परो है, तिस ही ह्वै है मालुम।
मन कारन जो उनको छाया-तेहि छाया में अटके।

वह कहते हैं यह मन बहुत ज़ालम है। जो दोनों निर्गुण और सरगुण की उपासना करने वाले हैं, ये किस की करते हैं? क्या परमात्मा की उपासना करते हैं? नहीं, ये अपने मन की ही उपासना करते हैं, एक आदमी कहता है कि परमात्मा निराकार है उसका कोई रूप नहीं दूसरा साकार कहता है जो परमात्मा को निराकार मानता है वह भी उसका मन है और जो साकार मानता है वह भी उसका मन मानता है। अगर वह साकार की पूजा करता है तव भी अपने मन की पूजा करता है अगर वह निराकार मानता है तब भी अपने मन की पूजा करता है।

आप लोग सत्संग के लिए आये हैं। मैं जानता हूं कि आप लोग मेरी इस शिक्षा के अधिकारी नहीं हैं। बुरा न मानना, मैं बड़ा साफ आदमी हूं। आप लोगों को इस शिक्षा की आवश्यकता नहीं है। एक दिन पहले एक आदमी मेरे पास आया। वह

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

क्यों आया ? क्योंकि उसके संतान नहीं थी। क्या बच्चा फकीर चन्द ने देना है ? उसे युक्ति बता दी कि इस प्रकार से बच्चा पैदा होगा जैसी मेरी बुद्धि थी। इसलिए गुरु, का दर्जा ईश्वर, परमेश्वर, ब्रह्म, पारब्रह्म, सत, अलख अगम और अनामी से अधिक है क्योंकि गुरु तो तुम्हारा self अपनी ज़ात है। जब मैं यह बात कहता हूँ तो अपनी आत्मा से पूछता हूँ कि अगर तू ग़लत ढंग से गुरुमत की मान प्रतिष्ठा बढ़ायेगा या इसकी पुष्टी करेगा तो कुष्टी होकर मरेगा। गुरु को तो सभी मानते हैं मगर संत सब क़ुछ ही गुरु पर छोड़ते हैं। वे किसी ईश्वर, परमेश्वर, ब्रह्म, पार ब्रह्म को नहीं मानते और यही कारण है कि लोग संतों को गालियें निकालते हैं। एक बड़े अच्छे पण्डित यहां आया करते हैं उन्होंने भी कह दिया था कि कबीर क्या जानता है। वे लोग क्यों कहते हैं ? क्योंकि उन्होंने खण्डन का कारण नहीं बताया।

इसका क्या भाव है ? कि तुम्हारा मन ही इस जीवन का सब कुछ करने वाला है। जब तक कोई आदमी इस मन के चक्कर से नहीं निकलेगा

वह लाख शब्द अभ्यास करे, लाख संन्यास ले और लाख दान पुन्य करे, जो इच्छा करे वह इस चक्कर से नहीं निकल सकता। इस वास्ते कहते हैं कि ज्ञान के बिना मोक्ष नहीं। ज्ञान क्या है? ज्ञान देने वाला गुरु होता है :—

वाणी गुरु, गुरु है वाणी, बाणी अमृत सारे।

हर आदमी गुरु बनने के योग्य नहीं है। ज्ञान क्या है? मन के चक्कर से निकल जाना या अपने आपको जानना। यह सारा झगड़ा तुम्हारे मन का है। जब तक कोई आदमी मन से बाहर नहीं निकलता या मन के असली रूप को नहीं पकड़ता वह कभी भी दुखों और सुखों से नहीं बच सकता और मोक्ष को प्राप्त नहीं हो सकता। कितने दुखी आदमी आते हैं। कोई रोता, कोई हँसता, किसी को कोई दुख, किसी को कोई दुख है। ये सब मन के ही चक्कर में हैं और कुछ भी नहीं है। इस मन को समझना है। अगर कोई मन को समझ जाये तो जो पिछले कर्म किये हुये हैं वो तो भोगने पड़ेंगे मगर वह उन्हें mind नहीं करेगा :—

मन कारन जो उनको छाया, तेही छाया में अटके।
निरगुन सरगुन मन की बाज़ी, खरे सयाने भटके।

कबीर साहिब कहते हैं कि ये सब मन की छाया में भटक गये। जिस प्रकार आज किसी के अन्तर बाबा फकीर प्रकट हो गया। उसने समझा कि फकीर चन्द होशियारपुर से आया है और वह मुझे गुरु मानकर पूजने लगा तो क्या वह भटका या नहीं भटका ? वह भटक गया क्योंकि मैं तो उसके अन्तर नहीं गया, न ही मुझे पता है यह जितना झगड़ा है सब तुम्हारे मन का है। इस मन के चक्कर से वह बच सकता है। जिसे किसी पूर्ण गुरु की संगत मिली हुई हो। उसे गुरु के बचनों से ज्ञान होता है तब वह बच सकता है। हमारे जितने झगड़े धर्म के हैं ये सब के सब माया और काल है और कुछ नहीं :—

मन ही चौदह लोक बनाया, पांच तत्त गुन कीन्हे।
तीन लोक जीवन बस कीने, परै न काहू चीन्हे।

मन एक ऐसी चीज है जिसने सारे संसार को बनाया है। अब मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं कि क्या तू जानता है कि मन क्या चीज है ? वह किसी को दिखाई नहीं देता। परै न काहू चीन्हे। क्यों ? जो कुछ भी हमारे अन्तर फुरना फुरती है उससे मस्तिष्क के cells खुलते हैं। जब प्रकाश रूपी आत्मा हमारे अन्तर आता है तो वह मस्तिष्क के cells में से शरीर में आता जाता रहता है। ज्यों २ बढ़ता जाता है त्यों २ उसमें इन्द्री

जन्य ज्ञान (Development of Senses) बढ़ता रहता है और मन चित, बुद्ध अहंकार पैदा होते रहते हैं मगर उसका अपना कोई रूप नहीं। वे बाहर के प्रभाव हैं, कुछ अपनी प्रकृति और कुछ बाहर से सुनी हुई बातें। हम जितनी भी बातें करते हैं यह सब बाहर का प्रभाव है। राधास्वामीमत ने अपना 'सारबचन हदायतनामा" लिखा, गुरु नानक साहिब ने जो कुछ कहा, इन सबके मस्तिष्क के ऊपर कबीर साहिब के शब्दों का प्रभाव था, वे घर से नहीं लाये। मन वह चीज़ है जो आपको दिखाई नहीं देगा। यह पैदा होता रहता है संस्कार हैं, जैसे जैसे प्रभाव बाहर से मिलते हैं। जब तक कोई आदमी इन संस्कारों के रूप को नहीं जानता उसके ऊपर हर प्रकार का प्रभाव हो सकता है। हिप्नोटिज्म व मिस्मरेज्म भी उसपर प्रभाव डाल सकता है। उसे मूर्ख और बुद्धिमान भी बना सकता है, क्योंकि उसकी अपनी समझ नहीं इस वास्ते संतों ने बार २ कहा है कि "पूरा गुरु"। गुरु नानक साहिब की बाणी पढ़ो। वहां भी पूरे गुरू का वर्णन आया है। हर जगह गुरु की महिमा है। मगर यह किन के लिए है? केवल उनके लिए जो

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

इस संसार में रहकर दुख से घबराये हुये हैं। यह संतमत उनके लिए नहीं है जो पुत्र धन उन्नति और कुछ चाहते हैं। उनके लिए अगर कोई चीज़ है तो यह है कि किसी सन्त के संस्कार से अपने मन के विचारों को अच्छा बनायें इसे "शिव संकल्पं अस्तु" कहते हैं। यह वेदमार्ग है। संसारी कामों के लिए सन्तमत का कोई concern नहीं है। यह तो हम गुरुओं ने अपने मानप्रतिष्ठा, धनधान्य और हज़ारों का गुरु कहलाने के लिए जो आया उसे नाम दे दिया। नाम का अधिकारी कौन है ? नाम तो उसे मिलना चाहिए :—

विषयों से जो होय उदासा, परमार्थ की जा मन आसा।
धन संतान प्रीत नहीं जाके, खोजत फिरे साध गुरु जाके।

उनके लिए यह नामदान और सन्तमत का सत्संग है। सर्वसाधारण के लिए नहीं है सर्वसाधारण के लिए "शिव संकल्पं अस्तु" है इस वास्ते मैंने अपने स्थान का नाम रुहानी आश्रम, अध्यात्मिक सत्संग या राधास्वामी सत्संग नहीं रखा। यहां Be-Man-Temple बनाया कि पहले इन्सान बनो, आचार व्यवहार ठीक करो, अपने भाव तथा विचारों को शुद्ध रखो और अपने

विचार को शक्तिशाली बनाओ। जब तक तुम्हारा मन तुम्हारे वश में नहीं है तुम इसे अपने अधीन नहीं रख सकते और न ही संसार में कोई लाभ उठा सकते हो। जो कुछ है तुम्हारे पास है। तुम Optimistic Views रखो, आशावादी रहो। उस मालिक का कोई रूप नहीं। एक रूप मान लो। जो जिसको पूजता है उसके सब काम उसके केवल विश्वास और श्रद्धा करती है, दूसरा कोई भी कुछ नहीं कर सकता। मैं यह काम करता हूं क्योंकि मेरे जिम्मे तीन कर्त्तव्य हैं निवल अवल और अज्ञानी जीवों की सहायता करना, जगत कल्याण के लिए काम करना और जीवों को भवसागर से पार करना। अब मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं कि क्या तू किसी को फूँक मारकर भवसागर से पार कर सकता है ? नहीं, कोई भी नहीं कर सकता है। मैं जो बात कहता हूं अगर वह समझ में आ जाये तो तुम भवसागर से पार हो सकते हो। वह समझ क्या है ? यही कि इस मन के रूप को समझो, मन की चाल में मत फँसो, यह मन ऐसा वैरी है कि कभी तो आदमी को किसी ढंग से मारता है, सुरत को काबू करता

कभी किसी ढंग से और कभी किसी ढंग से और हम उस चक्कर में फँसे हुये हैं। लोग चिन्तपुरनी को मत्था टेकते हैं, दयोटसिद्ध जाते हैं और कई जगह जाते हैं और होशियारपुर आते हैं मगर कोई सच्चाई नहीं बताता। अगर सच्च पूछते हो तो मेरी भी यह ग़लती है। संसार को सच्चाई की आवश्यकता नहीं। संसार तो संसार के झगड़ों में पड़ा हुआ है, सच्चाई कौन चाहता है। संसार वालों को संसार के आराम के लिए चीजें चाहिए। जो तुम्हारा विश्वास या कर्म होते हैं तुम्हें वह मिलता है।

आपलोग आज जा रहे हैं। मैंने अपना कर्तव्य पूरा कर दिया। मैंने आपसे यही वायदा किया था कि आप आ जाईऐ मैं आपके ग़म दूर करने की कोशिश करूंगा। भ्रमों से निकलना तुम्हारा अपना काम है। कौन निकालेगा? गुरु, कौन गुरु निकालेगा? फकीरचन्द होशियारपुर वाला? नहीं, जो फकीर चन्द होशियारपुर वाले ने तुम्हें समझ दी है वह समझ जीवन में सहायता करेगी न कि फकीरचन्द तुम्हारी सहायता करेगा, इसी एक भ्रम

में आकर हम लुट गये। इन सारे धर्मवालों और महात्माओं ने ऐसा पाखन्ड का जाल बनाकर हमें लूटा है कि जिसका कोई हिसाब नहीं :—

जो कोउ कहै हम मन को मारा, जा के रूप न रेखा।
छिन में कितने रँग ल्यावै, जे सपनेहु नहिं देखा।

कबीर हाहिब कहते हैं कि जो यह कहता है कि मैंने मन को मार लिया है वह गलत कहता है, किसी ने इस मन को नहीं मारा न यह मरता है। क्योंकि मैं यहां हूँ, आपका वाहर का external effect) मुझपर पड़ेगा। जैसी मेरी प्रकृति है वैसा मैं उस परिणाम पर पहुंच करअपने आपमें सोचूँगा। मन नहीं मारा जाता, केवल मन के रूप को समझकर उसमें न फँसना ही मन को मारना है। ये बातें केवल किताबों में लिखी हुई हैं कि काम क्रोध आदि को मारो मगर किसी ने आज दिन तक नहीं मारा, कैसे मानूँ कि मरता है। काम, क्रोध, लोभ, मोह अहँकार ये जीवन के पांच अंग हैं जिसमें काम नहीं वह तो हीजड़ा है, वह सिवाय ताली बजाने के और क्या काम करेगा, अगर क्रोध नहीं है तो जो भी उठेगा तुम्हें दबायेगा, जिसमें लोभ नहीं है वह अपना पेट नहीं पाल सकता। इनके

विरुद्ध शिक्षा देना ग़लत शिक्षा देना है। जैसे अगर मन बन्द हो जाये तो जीवन नहीं रहता। इसलिए केवल मन के रूप को समझना है और जहां से हम आये हैं, उसका इष्ट रखना है। हम प्रकाश और शब्द से आये हैं, इस वास्ते, सनातनधर्म में गायत्री के मन्त्र में यही कुछ कहा गया है कि जाग्रत स्वप्न सुषुप्ती से परे जो सूर्य है उसका ध्यान करो वह तुम्हारी बुद्धि का प्रेरक होगा और राधास्वामी-मत वाले संत भी यही कहते हैं कि सहसदल कंवल, त्रिकुटि सुन्न महासुन्न, भँवरगुफा और सतलोक से आगे अलख, अगम और अनामी में जायो। कोई अन्तर नहीं है, केवल बात यह है कि हम आमल नहीं हैं और जो कुछ हम किसी को कहते हैं किताबों का हवाला देते हैं। मैं दूसरों की किताबों का हवाला नहीं देता क्योंकि दाता ने जब मुझे नाम दिया था तो कहा था फकीर :—

जब तक न देखो अपने नैना।
कभी न मानना, मेरे बैंना।

फकीर! जब तक तुम आप किसी चीज़ को न देख लो मेरी बात पर विश्वास न करना, दाता ने मुझपर दया करदी, यह गुरु पदवी दे दी।

इस गुरु पदवी पर आने से जो कुछ मैंने सीखा है यह तुम लोगों से सीखा है। आप लोग इस ज्ञान के देने वाले हैं, केवल इस एक विचार से कि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता मेरे जीवन का तख्ता ही बदल गया और मैं शिक्षा को बदल सका :—

> रसातल इकइस व्रह्म ंडा, सब पर अदल चलावै।
> षट रस में भोगी म राजा, सो कैसे कै पावै।

अपने आप से पूछता हूं कि तू बता तू ने मन को क्या समझा, और यह मन कैसे पैदा होता है ? जब प्रकाश रूपी आत्मा इन्सान के अन्तर इस स्थूल शरीर में आता है तो खून के रास्ते वह प्रकाश हर समय शरीर मैं पैदा करता रहता है। ज्यों २ उसकी आयु अधिक होती जाती है तो मस्तिष्क के Cells खुलते जाते हैं। अगर कोई छोटा बच्चा जिसकी आयु दो चार दिन हो, उसका ओप्रेशन करना हो तो उसे कुछ सुँगाया नहीं जाता क्योंकि उसकी खून की गति न होने से उसमें बहुत ही कम बोधभान होते हैं। सब खेल उसी Supereme power का है। जब वह नीचे आती है चाहे उस व्रह्मण्ड में आये, चाहे अनेकों व्रह्मण्डों में आये तो वहां उसके अन्तर एक सनसनाहट पैद होती है जिस प्रकार सोडा और रादरी मिला

देने से शूँ शूँ होती है। उसी प्रकार उस प्रकाश के किसी स्थूल चीज़ में आने से एक प्रकार की Sensation पैदा होती है, वह Sensation जब बिल्कुल कारण अवस्था में होती है तो उसका नाम सुरत है, जब वह नीचे आ जाती है तो उसका नाम आत्मा बन जाता है। वही Sensation जब और नीचे आ जाती है तो उसे हम मन कह देते हैं। वही Sensation जब शरीर में आ जाती है तो हम उसे जीव कह देते हैं। ज्यों-ज्यों वह नीचे आती है उस पर माया का खौल या गिलाफ चढ़ता जाता है जिसका आखरी रूप यह हमारा शरीर है।

सब के ऊपर नाम निहच्छर तंह लै मन को राखै।
तब मन की गति जान परै यह संत कबीर मुख भाखै।

इस मन से बचने का क्या ढंग है ? क्षर क्या है ? शरीर के बोधभान। अक्षर क्या है ? मानसिक विचार, मन से परे की अवस्था अर्थात प्रकाश और शब्द। कबीर साहिब कहते हैं कि जब तक मानव मन से परे नहीं जाता वह उसके रूप को नहीं समझ सकता। मैं ऊँचे से ऊंचा अभ्यास करता था मगर नहीं निकल सकता था। जब दाता के पास जाता था तो वह कहते थे कि अभी तू काल माया से नहीं

निकला। मैं पूँछता था कि मैं कैसे निकलूँगा? उन्होंने कहा तुम मेरी आज्ञा मानते चलो, यह काम मुझे मेरे कल्याण के लिए दिया था। जब से मुझे पता लगा कि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता और यही एक परदा था जिस में आकर Humanity भिन्न-२ (अनेक) धर्मों में बट गई और हम आपस में लड़ते हैं। मैंने इस समय इस शिक्षा की आवश्यकता महसूस की इस लिए मैंने सच्चाई को वर्णन कर दिया।

ये मौजूदा महात्मा जो गुरु बने हुये हैं या जो आने वाले महात्मा हैं वे अपने निजी स्वार्थ, मान प्रतिष्ठा को छोड़कर सच्चाई से अपने जीवन का अनुभव पब्लिक के सामने वर्णन करें यह झगड़ा तब समाप्त होगा वरना नहीं। क्योंकि जिस आदमी ने गद्धी बनाई है और गुरु बना हुया है वह ऐसी बात कब कहेगा क्योंकि ऐसा कहने से धन नहीं आयेगा और मान प्रतिष्ठा नहीं होगी जैसे मैं कहता हूं कि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता। मैं स्वयं चकित हूं कि मेरा इतना स्पष्ट वर्णन होते हुये भी दाता यहां कैसे प्रबन्ध कर रहा है। यहां पब्लिक सहायता करती है। Free Publication है। यह उसकी मौज है। मैं

कहता हूं :—

I am the incarnation of Truth and Reality and I have come in this physical form of Faqir Chand to disclose the secrets of spirtnality and mind.

ताकि जो इस संसार की लूट से बचना चाहें वे बच जाये, हमें लूट ने इतना मारा है जिसका कोई अन्त नहीं ? गुरु की क्या सेवा है ? यह जो तुम इस समय कर रहे हो। अगर रुपया देने से किसी को मुक्ति मिल जाती तो ये बड़े - २ धनी लोग शान्ति प्राप्त कर लेते। गुरु सेवा है, गुरु की बात को सुनना और उसपर अमल करना, मन के झगड़ों से वह बच सकता है जिसे गुरु से ज्ञान हो गया है, उसकी बात को समझकर मन के चक्कर से निकलो। अपना इष्ट प्रकाश और शब्द रखो, फकीरचन्द नहीं। नाम क्या है ? मन से परे चले जाना। जब तक इन्सान मन से परे नहीं जाता, उसकी समझ में मन नहीं आता।

मैं जन्म बनाना चाहता था कि मैं फिर वापिस न आऊं और मुझे असलियत का पता लग जाये। प्रकृति मुझे संतमत में ले आई उन्होंने नामदान दिया

और सतसंग कराया, यह कराया और वह कराया, मैंने सब कुछ किया। केवल अपने मन को इसमें ठहराने का यत्न करो, जब वह अच्छी प्रकार ठह जाये समाधि लग जाय, योग से चित्त की वृत्ति निरोध को प्राप्त हो जाये अर्थात अपने अन्तर शान्त हो जाये तब उसे ज्ञान मिलता है और इस संतमत से असली लाभ प्राप्त होता है।

इस वास्ते संत जान बूझ कर इस ऊंची शिक्षा को परदे में रखकर पहले सुमिरन ध्यान भजन बताते हैं। इससे जब चित्त की वृत्ति शान्त हो जाती है या उनमें से कोई लायक निकलता है तो उसे वह आगे का मार्ग बताते हैं। यह बात मैंने समझी है।

सबको राधास्वामी।

★

सत्संग हज़ूर परमदयाल जी महाराज मानवता मन्दिर होशियारपुर ।

दिनांक 2-9-1979

मन रे मान बचन इक मेरा ।

मैं तेरी दासी जन्म जन्म की, तू हुआ स्वामी मेरा।
तीनलोक का नाथ कहावे, तीन देव तेरा चेरा।
ऋषि मुनि सब पर हुकम चलावे, जती सती सब घेरा।
तेरे वस सुर नर और जोगी, कोई तेरा हुकम न फेरा।
जिस चाहे तिस जगत फंसाए, और त्राहे तिस करे निबेरा।
ऐसी महिमा सुनी तुम्हारी, ताते तुम पे करु निहोरा।
इस तन नगरी तुच्छ देश में, क्यों कैदी होय पड़े अन्धेरा।
सतगुरु मोसे कहा बचन इक, मन को संग ले चलो सवेरा
ताते तुम पै करु बीनती, चढ़ो गगन क्यों करो अबेरा।
ईन्द्री द्वार विषय अब त्यागो, करो अभी सुलझेरा।
तुम सा संगी और न कोई, मैं तुम्हारी और तुमही मेरा।

मुझ दासी का कहना मानो, गगन मण्डल चढ़ बांधो
डेरा।
जैसे थे तैसे फिर होइ हो, क्यों दुख सुख यहां सहो
घनेरा।
सत गुरु पूरे भेद बताया, मनको संग ले कर घर फेरा।
मैं हूं सुरत पढ़ी बस तेरे, बिन तुझ मदद शब्द नहीं हेरा।
जो ये कहन न मानो मेरी, तो चौरासी करे बसेरा।
अब तुम दया करो मेरे ऊपर, सुन बिनती खोजो धुन
नेरा।
हम तुम दोनों चढ़ें अधर में, जाकर बसें पहाड़ सुमेरा।
तुम यहां रहना राज कमाना, हम पहुंचे जहां राधास्वामी
डरा।

काफी समय हुआ मैंने यह शब्द पढ़ा था, ये सार बचन या शब्द है और मेरे ख्याल में हजूर महाराज का है। वो अपने मन से दुखी हो कर ऐसा कहते हैं। कबीर साहब कहते हैं के मन चौदा लोक में रहता है। चौदा लोक कौन से हैं? छे लोक शरीर के, छे लोक मन के और दो लोक सत और अलख के। इस मन से कौन निकलना चाहता है? क्या आप दुनियांदार कोई निकलना चाहता है। क्या आप को इच्छा है मन से निकलने की? और जो मेरे जैसे कहते हैं वो गलती पर हैं क्योंकि मनको हमेशा के लिए छोड़ना मेरे लिए भी मुशकिल हो

रहा है। तुमको क्या कहूं दुनियां की ज़रूरतें तंग करती हैं।

रात का अपना किस्सा सुनाता हूं कि मेरे साथ क्या गुज़री, रात को मैं लेट गया। पहले तो शब्द में चला गया। फिर ११ बजे नींद खुल गई। क्योंकि दिन को मन्दिर में सो जाता हूं। रात ११ बजे से सुबह तक जागता रहा। सोया नहीं समाधि में रहा। उस समय का रात का ये तजुर्बा है। क्योंकि मन मेरे साथ था। वह तरह तरह के ख्याल उठाता था। अन्दर जाता तो कई प्रकार के चित्र आते थे, अन्तर जाने नहीं देते थे। हालांकि मैं जानता भी था, ज्ञान भी था कि ये कुछ नहीं, फरज़ी है, कल्पित है, संस्कार है, ख्याल है और माया है। मगर उनको छोड़ नहीं सकता था, फिर भी वो आती थी हालांकि शकलें मुझे दुखदाई नहीं थी, मगर वो सिनेमा जैसा तमाशा था, और मेरे लिए निकलना मुशकिल था, कोई महात्मा अपनी कमज़ोरियां तुम को नहीं बताता, हम सब बगले भगत हैं। बाहर बैठ के दाढ़ी बढ़ा कर कहते हैं कि हम बड़े महात्मा हैं। सब के साथ ऐसी

गुज़रती है। कोई अपनी रहनी किसी को बताता नहीं। जब तक मैंने इन शक्लों को छोड़ कर शब्द को नहीं पकड़ा तब तक मेरा मन शक्लें बनाता रहा। बड़ी मुशकिल के। बाद मैंने अपने आपको काबू किया। उस समय मुझे ख्याल आया कि क्या करें कोई तरीका है बचने का ? और इस शब्द की याद आई :—

मन रे मान बचन इक मेरा।
मैं तेरी दासी जनम जनम की तू हुआ स्वामी मेरा।

मैं बीसवीं सदी का आदमी हूं। अपनी आत्मा से पूछता हूं कि वह कौन कहता है ? वो चीज़ हमारे अन्तर कौन है जो मन को ये कहती है कि मैं तेरी जन्म जन्म की दासी हूं ? उस चीज़ का मुझे कैसे पता लगा ? जब कभी मैं रूप रंग रेखा को छोड़ जाता हूं यानी इस मन से छुटकारा पा जाता हूं तो आगे प्रकाश और शब्द में चला जाता हूं। जो चीज़ प्रकाश को देखती और शब्द को सुनती है वो सुरत है, जो मन से ये कहती है। क्योंकि वो सुरत जब से दो बनी, इस मन के चक्कर में आई और मन उसका स्वामी बन गया ? क्योंकि उसके शरीर के अन्दर आने से फुरना फुरती है। खाहिश या वासना पैदा होती है और जो खाहिश या बासना

है वो मन का चक्कर है। जिसने भी इस शब्द को लिखा, उसने किस ख्याल से इसको लिखा उसका अपना अनुभव होगा मुझे नहीं मालूम, मैं किस ख्याल से इसको ठीक मानता हूं वह आपको बताता हूं। जो जन्म जन्म से यहां फंसी हुई है वो आई कहां से ? ऊपर से जिसको परमपद बोलते हैं। वहां से सारे लोकों में से होती हुई यहां आई। ये फकीर चन्द तो मेरे शरीर का नाम है। अकल व विचार मेरे ख्यालात हैं। जो असली चीज़ मेरे अन्तर या तुम्हारे अन्तर में है वो है जिसको मैंने तुम को बताया :—

तीन लोक का नाथ कहावे-तीन देव तेरा चेरा।

असल में ज़िन्दगी या हस्ती की चेतनता जो हमारे अन्तर है उसका नाम ही मन है। वह चेतनतायें तीन प्रकार की हैं। कहीं कारण है, कहीं सूक्ष्म है और स्थूल है, कहीं वो शरीर में है, कहीं वो ख्यालात के रूप में है उसको मन कह देते हैं। कहीं वो रूह यानी प्रकाश में है उसको आत्मा कह देते हैं। इसलिए मन के कई रूप हैं कारण, सूक्ष्म, स्थूल, कोई मन को दसवें द्वार तक समझता

है, कोई मन को त्रिकुटी तक समझता है और कोई मन को ऊंचा समझता है।

संतों ने चौदह लोक में मन बताया है। केवल शब्दों का फरक है। तीनलोक, शरीर, मन, आत्मा जाग्रत, स्वप्न व सुषुप्ति, वो तीनों का पैदा करने वाला है और वो सब उस मन के चक्कर में ही हैं। बासना जो पैदा होती है और इस से जो फुरना फुरती, ठहरती और समय पर समाप्त हो जाती हैं ये ब्रह्मा, विश्नु, महेश तीन देव सब हमारा मन ही है।

ऋषि मुनि सब पर हुकम चलावे जती सती सब घेरा

एक आदमी जप तप और ध्यान करता है। उसका मन ही तो कहता है कि जती बन जा तो अच्छा हो जायेगा या ध्यान करेगा तो तुझे कुछ मिल जायेगा। योगी किसी वस्तु के साथ अपने आपको लगाकर जोड़ता है। तो जिस के साथ उसने अपने मन को लगाया है वो तो उसका अपना ही मन है। जिस तरह तुम लोग मेरा ध्यान करते हो या किसी अपने गुरु का ध्यान करते हो तुम समझते हो वह गुरु कोई और है। व्यास वाला है

या होशियारपुर वाला है। दरअसल वो जो गुरु है जिसका रूप तुम्हारे अन्तर प्रगट हुआ वो तुम्हारा अपना ही मन है। इस वास्ते ऋषि मुनि किस को पूजते रहे ? कोई राम को पूजता है, कोई कृष्ण या देवी को पूजता है। जिसको वह पूजता है वह है कौन ? ए इन्सान ! वह तेरा अपना ही मन है। तेरा अपना ही विश्वास है। यही एक राज़ था संतमत का जिसको पर्दे में रख करके हम भोले भाले जीवों को अज्ञान में रख कर हम को लूटा गया है और इन गुरुओं, महात्माओं, मज़हब वालों और पंथ वालों ने हमको मूर्ख बनाया है। इनको खुद पता नहीं कि असलीयत क्या है। तो स्वामी जी साफ लिख रहे हैं :

ऋषि मुनि सब पर हुकम चलावे जती सती सब घेरा

क्योंकि जो यह काम करते हैं वे अपनी मरज़ी से कहते हैं।" उनका अपना मन ही जो है वही उनको किसी को कहता है, जप कर, किसी को कहता है तपकर, किसी को कहता है, बायां बाजू खड़ा करके खड़ा रह इत्यादि :—

तेरे बस सुर नर और योगी कोई तेरा हुकम न फेरा,

कैसे फेरेंगे ? जो कुछ मन कहता है, हम सब करते हैं। अच्छाई भी मन कराता है और बुराई भी मन कराता हैं। वो कहते हैं योगी, जती संन्यासी कोई तेरा हुकम फेर नहीं सकता :—

जिस को चाहे जगत फंसावे और चाहे जित करे निबेरा

ये मन के अखत्यार में है। अगर मन के चक्कर में रह गया तो आदमी जगत में फंसा रहा, अगर मन के चक्कर से ऊपर चला गया तो वो बच गया। तो इस मन को बताने और समझाने के लिए ये सत्संग है ताकि जीव को मन क्या है, आत्मा क्या है और अपने रूप का ज्ञान हो जावे :—

ऐसी महमा सुनी तुम्हारी, ताते तुमते करूं निहोरा

वो कहते हैं। तेरी महिमा इतनी बड़ी है कि तू सब को काबू में रखता है इस वासते मैं तुम से प्रार्थना करती हूं। ये एक ख्याल को ज़ाहर करने का एक तरीका या ब्यान करने का ढंग है, कि सुरत मन के पास जाकर ऐसे प्रार्थना करती है :—

इस तन नगरी तुछ देश में, क्यों कैदी हुए पड़े अन्धेरा

तुम देखो, क्या हम सब इस शरीर के अन्दर कैदी नहीं हैं। मैं अपने आपको पूछता हूं कभी खारिश है, कभी पेट दर्द है, कभी कबज़ी है, कभी दांत दूखता है, तो दुख सुख

इस शरीर में हैं या कि नहीं ? तो हम इस मन या इच्छाओं की वजह से इस दुनियां के चक्कर में हैं।

सतगुरु मोसे कहा वचन एक मन को सँग ले चलो सवेरा

गुरु ने मुझे ये बात कही कि मन को साथ ले के ऊपर चल। जो मन को साथ ले जाता है, वो कहां तक जाता है ? निर्विकल्प समाधि तक जा करके मन संकल्प नहीं करता। निर्विकल्प समाधि का दूसरा नाम है महासुन्न, तीसरा नाम मैं अपनी तरफ से बेख्याली बनाता हूं। जिसके दिल में कोई ख्याल नहीं आता, कोई विचार नहीं उठता, कोई शकल नहीं बनती, कोई कुछ नहीं होता, वह जो अवस्था है उसका नाम है दसवां द्वार। दुनियां मर गई दसवां द्वार ढूँढते ढूँढते। कानों में उंगलियां डाल डाल के मैं भी मर गया।

ताते तुमते करूं विनती—चढ़ो गगन क्यों करो अबेरा।

वह कहते हैं, तू गगन को चढ़ चल, क्योंकि यहां तो शरीर में रहते हुए कोई न कोई दुःख ही है। तो ये दुनियां है क्या ? हम लोग जितने हैं, इस दुनियां के पीछे फिरते हैं। पुत्र नहीं है, धन नहीं है। अरे ! ये तो जो कुछ है, ये दुनियां का काम है। जो इसमें फँसा, वह फिर ज़न्म मरण से बच नहीं सकता।

इस वास्ते सन्तों का मार्ग जो है, वह केवल जन्म मरण से रहित होने के लिए है और प्रवृत्ति मार्ग जो है, वह मन को अच्छा ख्याल, अच्छा विचार और अच्छी आस देने के लिए है ताकि तुम्हारे लोक और परलोक दोनों सुधर जावें। सन्त मत की ऊँची शिक्षा केवल निवृति मार्ग की है। क्योंकि जब तक कोई इन्सान नहीं बनता, वह रुहानीयत का हकदार नहीं है। इसलिए मैंने बड़े तजुर्बे के साथ 'इन्सान बनो' की आवाज़ उठाई है। जब तक कोई आदमी पहले इन्सान नहीं बनता, वह आगे रुहानीयत को नहीं पा सकता। जिसको मरज़ी गुरु कर ले। इन्सान बनना क्या है? कि अपने मन को ऐसे ख्याल देना जो तुम्हारे लिए या दूसरों के लिए कल्याणकारी हों, बस इतनी ही बात है।

इन्द्री द्वार विषय रस त्यागो—करो अभी सुलभेरा।

अब तुम देखो, बुरा न मानना, कौन है जो इन्द्री द्वार विषयों को त्यागता है? जवानी में तो खैर हुआ, बच्चे हो गए। तीन-तीन चार-चार बच्चे तुम्हारे हैं। मगर तुम विषय अब भी नहीं छोड़ते और फिर ये उम्मीद रखते हो कि किसी गुरु के पास जाओ तो वो तुम्हें सतलोक ले जायेगा। बिल्कुल

बकवास और झूठ है। इन गुरुओं ने हमको इतना मूर्ख बना के लूटा है जिसकी कोई हद नहीं। इसमें तो शर्त यही है कि इन्द्रियों के विषय विकार को छोड़ो। इस वास्ते मैं लोगों को नाम नहीं देता क्योंकि नाम देना हानिकारक है। उससे किसी को लाभ नहीं। मेरे पास जैसा आदमी आता है, उसके जैसे हालात होते हैं, उनके अनुसार उसको कह देता हूं। दुनियांदार आता है तो दुनियां की बात बता देता हूं। परमार्थ वाला आता है या चाहता है तो परमार्थ की बात बता देता हूं। ये जो किसी वर्णात्मक नाम का जाप किया जाता है: जैसे कोई पांच नाम, कोई राधास्वामी, कोई अल्ला कोई वाहेगुरु या राम राम मन से जपता है, वो तो काल मत में है। यानी मन के चक्कर में हैं। वह तो मन को साधने या इकट्ठा करने का एक ढंग है। तुम किसी भी वर्णात्मिक नाम से, जो तुम्हारे गुरु ने बताया, उससे साध लो। वह तो केवल मन को इकट्ठा करने को है। असली चीज़ तो निर्विकल्प समाधि के बाद आती है, यानी दसवें द्बार से आगे आती है। यही बाबा सावनसिंह जी सारी आयु कहते रहे। दस द्वारे लंघो अग्गे सतगुरु खलोता ए। दुनियां ने इसका अर्थ उल्टा

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

समझा कि आगे बाबा सावनसिंह जी का सुन्दर चेहरा होगा, दाढ़ी होगी, पगड़ी होगी।

जब तक दाढ़ी और पगड़ी या फकीर चन्द का रूप तुम्हारे अन्दर आता है तब तक तुम मन के चक्कर से बाहर हुए कैसे ? जब तक तुम किसी गुरु को या राम को या कृष्ण को इन्सानी रूप में अपने अन्तर में देख रहे हो, वो तो तुम्हारा मन ही है। फिर तुम कहोगे ये नहीं करना चाहिये ? नहीं, ये लाज़मी है। सुमिरण और ध्यान करने से मन तुम्हारे काबू में आ जावेगा। यह न समझना कि सुमिरण ध्यान को गलत कहता हूं। सुमिरण ध्यान जड़ है। जिस प्रकार बच्चे स्कूल में जाते हैं, उनको पहाड़े पढ़ाते हैं। अगर वो पहाड़े याद न करें तो आगे परीक्षा कैसे देंगे। ये जो वर्णात्मिक नाम का सुमिरण ध्यान है, ये रुहा-नियत में जाने से पहले पहाड़े हैं। इनका होना ज़रूरी है। मैं जानता हूं कि मैं ऊंचा बोल रहा हूं। ये ठीक है। प्रत्येक आदमी अकली तौर पर तो मेरी बात को समझ जावेगा मगर अमल करना कभी कभी मेरे लिए भी मुश्किल हो जाता है तो तुम को क्या कहूं ? मैं जानता हूं कि ये मन-माया सब काल्पनिक है मगर

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

कई बार ऐसे Scene आ जाते हैं हालांकि मैं जानता हूँ कि यह कुछ भी नहीं हैं मगर फिर भी Scene फिरते रहते हैं। रात को यही मेरी हालत थी। तब मुझे ख्याल आया कि इस शब्द पर अपना अनुभव ब्यान करूं। जब तक शरीर और मन है-ये मन जिस प्रकार की प्रकृति तुम्हारी बनी हुई है वैसे विचार उठायेगा।

प्रकृति कैसे बनती है ? सब से पहले प्रकृति बनती है मां,बाप से, जब मां और बाप अपने रस के लिए आपस में मिलते हैं तो बच्चा आ जाता है। उसकी प्रकृति नेक कैसे होगी ? उसकी प्रकृति विषय की होगी या जिस प्रकार के ख्यालात जब बच्चा पेट में है-या दूध पीता है मां ने अपने दिमाग में रखे हुए हैं या रखती है। उन का असर उस बच्चे पर जायेगा कोई रोक नहीं सकता। ये सारी बातें मनु स्मृति में लिखी हैं। मैं ने उन को खोल दिया क्योंकि मैं समझता हूं कि इन्सान को असली पहलू में लाना मुश्किल है। जिस आदमी की बुनयाद ही ऐसी है जैसे जिस मकान की नींव रखते हो, अगर वो ही कच्ची है तो मकान नहीं

चलेगा। तो पहली नींव या नाम क्या है ? हमारी प्रकृति का बनना मां बाप के अधीन है जैसे उनके ख्यालात होंगे जिस भाव से वो आपस में मिलेंगे वो सँस्कार बच्चा लेगा कोई रोक नहीं सकता। रूहानियत की बात तो बड़ी ऊंची है। पहली बात ये है जो के आमतौर पर कहता रहता हूं कि हम लोग सन्तान को सन्तान के ख्याल से पैदा नहीं करते, हम तो अपने स्वाद और आनन्द के लिए जाते हैं। कोई शराब पी के जाता है, कोई भँग पी के जाता है, किसी के मन में कुछ होता है औरत के मन में कुछ होता है। तो फिर ये उमीद करो के तुम्हारे जो बच्चे पैदा होंगे वो दुनियां में तुम्हारे या देश के हितैषी होंगे ये बिल्कुल झूठी बात है और ग़लत बात है। मैंने अपने घर में और बाहर भी आजमाया है। मैं जो कुछ कहता हूं पुस्तक की लिखी नहीं कहता।

इन्द्री द्वार विषय अब त्यागो - करो अभी सुल फेरा

अगर कोई आदमी इस चक्कर से निकलना चाहता है तो उसको अपने विषय विकार का जीवन छोड़ना पड़ेगा। अगर ये नहीं छूटता तो तुम लाख किसी के

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY PURNADAYAL

चेले बन जायो, तुम्हें कोई लाभ नहीं। सहायता करने वाला तुम्हारा अपना मन है।

तुम सा संगी और न कोई मैं तुमरी और तुम हो मेरा।

इस में कोई झूठ है ? सब से पहले हमारा सम्बंध मन के साथ है। अगर मन नहीं है तो मैं बोल नहीं सकता और तुम सुन नहीं सकते।

मुझ दासी का कहना मानो गगन मण्डल चल बाधों डेरा।

वो कहते हैं गगन मण्डल चल, क्यों ? क्योंकि इस शरीर में रहते हुए कोई संत कोई परम संत, अवतार, पीर, औलिया, ये दावा नहीं कर सकता कि उसका मन बिलकुल ही हमेशा के लिए साफ रहेगा। जीवन है ही यही इस में दुःख सुख, पाप और पुन्न, धर्म और कर्म, नेकी और वदी, ऊँचाई और नीचाई ये जब तक हमारा शरीर है और मन है यह होता रहेगा कोई रोक नहीं सकता। मैं ने रात को अपनी घटना बताई कि नहीं बताई।

जैसे थे वैसे फिर होई हो, क्यों दुख सुख यहां सहो धनेरा।

वो कहते हैं, ऊपर चल। इस दुनियां में रह के दुख सुख के सिवाये तुझे मिलेगा क्या ?

सत् गुरु पूरे भेद बताया - मन को सँगले कर घर फेरा

गुरु ने कहा मन को महा सुन्न तक साफ रख के निर्विकल्प समाधि में जाओ, फिर मन को छोड़ जाओ फिर आगे जाओ

मैं हूं सुरत पड़ी बस तेरे, बिन तुम मदद शब्द नहीं हेरा

रात को मेरी हालत ऐसी थी, तब मैं ने इस शब्द को निकाला वरना मैं कभी ऐसा शब्द न लेता, तजुर्बे ने क्या साबित किया ? कि जब तक इन्सान की सुरत शरीर में और मन में है वह यदि ज्ञान भी रखता हो कि शरीर मेरा नहीं है, ये शक्लें मेरी नहीं है, फिर शरीर में बीमारी आयेगी, और वो शक्लें आवेंगी क्योंकि यह देश ही ऐसा है। इस का कानून ही यही है हो सकता है जो कुछ मैं कहता हूं ये सारा गलत हो। यह कह देना कि मैं जो कुछ कहता हूं सब यही final है मैं इस के हक में नहीं हूं। ये मेरा अपना रात का तजुर्बा है। शक्लें सामने आती थी। जब न हटा सका तो मैं ने ध्यान आदि सब छोड़ दिया और फिर शब्द में ऊपर गया, इस वास्ते कहते हैं ध्यानी भी भूल जाते है और गिर जाते हैं।

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

जो ये कहन न मानो मेरी - तो चौरासी करें बसेरा

सुरत कहती है कि अगर तू ऊपर चढ़ के मन से परे नहीं जाता तो भई तेरी चौरासी नहीं कटेगी

अब तुम दया करो मेरे ऊपर - सुन बिनती खोजो घुन नेरा
हम तुम दोनों चढ़े अधर में - जा कर बसे पहाड़ सुमेरा,
तुम वहां रहना राज कमाना -हम पहुँचे जहां राधा स्वामी डेरा

अब इस का जबाव मन देता है ।

मन बोला सुरत से फिर ऐसे
विषय स्वाद मो से जात नहीं छोड़ा

अब देखो तुम मतलव को समझो कि जो आदमी विषय और स्वाद में रहता है वो कभी वहां पहुंच सकता है ? वो वहां जा नहीं सकता।

कैसे करूं बचन कस मानूं - मैं इन्द्री बस हुआ नथोड़ा
वल पौरष मैं सब ही हारा - अब इन से मेरा चले ना जोरा
मैं चाहूँ छोड़ूं भोगन को - देख भोग बस चले न मोरा
आगे पीछे बहुत पछताऊँ - समय पड़े पर होवत चोरा

मौका आ जाता है। तो बस ज्ञान ध्यान सब घुरल हो जाता है ।।

कैसे चढ़ूं गगन को प्यारी - मन चँचल ज्यों दौड़त घोड़ा
ता ते तो से कहूं जतन से - चल सत गुरू पै करो निहोरा

एक यतन बताता हूं कि किसी गुरु के पास चलो वहां अपनी तकलीफों को ब्यान करो ।

शरण पड़ें अब मिलकर हम तुम - कर सत संग होय कुछ पोड़ा

मन कहता है कि हम तुम चलते हैं, गुरु के पास जाकर के सत् सँग करते हैं फिर हम में ताकत आ जावेगी ।

दया करें सत गुरू जब अपनी - पल पल राखें मो को मोडा
मैं अपने बल चढ़ं न कब ही-जब लग मिले न गुरू बन्दी छोड़ा

गुरु वो है जो निर्बन्ध है। मुझ को एक ऐसे गुरु मिले थे जब में उनसे प्रेम करता था तो वो लिखा करते थे किताबों में -

फकीरा गुरु तो तेरे पास
तेरे तन में तेरे मन में तेरे स्वासों स्वांस
गुरु नहीं कांशी गुरु नहीं मथुरा गुरू नहीं विच कैलाश
ढूंढ़ इसे अपने हृदय में वहां है गुरु का बास
कर अज्ञान का नास

मगर मैं उनके शब्दों की रुह को नहीं समझता था

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

समझाने को वो समझा गये। मगर हमारी खोपड़ी में समझ नहीं आती थी। क्यों नहीं आती थी ? क्योंकि बचपन की शादी से मेरा ब्रह्मचर्य गिरा हुआ था, बस ये एक कुंजी मैं ने समझी हुई है ताकि इन्सान अपने शारीरिक और मानसिक ब्रह्मचर्य को बनाये रखे, इस के अर्थ ये नहीं कि औरतों को जवाब दे दो। औरतें सन्तान पैदा करने के लिए होती हैं विषय भोग और स्वाद के लिए नहीं होती। हम सब लोग जितने हैं चाहे मर्द चाहे औरतें हम विषय भोग के स्वादी होते हैं। औरतों का हमारे साथ मेल अच्छी सन्तान पैदा करने के लिए है और घर में शान्ति सुख और आनन्द रखने के लिए है। मगर वो तो अब ज़माना बदल गया खुदरौ औलाद पैदा हो रही है। मियां बीबी अपने विषय विकार के लिये मिलते हैं तो सन्तान आ जाती है। अपने आप बिना बुलाये बच्चे (uncalled for children) आ जाते हैं। उन से ये उम्मीद करो कि ये देश में शांति लावेंगे नहीं ला सकते।

सुन कर सुरत अधिक हर खानी, चल जल्दी वो बन्धन तोड़ा

कहते हैं, गुरु के पास जाओ, वहां से सतसँग लो या

सुनो । वहां से तुम्हें सोजी मिल जायेगी तुम्हारे बन्धन कट जावेंगे ।

सत सँग सरन गही अब दोनों, भर भर पीवत अमी कटोरा
दोनों मिलकर चढ़े गगन को, शब्द शब्द रस हुए चटोरा
दया करी राधा स्वामी ने उन पर, हीरा मोती लाल वटोरा

हीरे मोती लाल क्या हैं ? कोई हीरे हैं ? हीरे मोती लाल अनुभव है, ज्ञान है, सच्ची समझ है । सच्ची समझ का नाम हीरे मोती लाल है । वो इकट्ठे किये यानी सच्ची समझ, सच्चा ज्ञान, सच्चा भेद, हमने सतगुरु की संगत से लिया और क्योंकि हमको इच्छा थी ऊपर चढ़ने की हम दोनों ऊपर चढ़ गये ।

राधा स्वामी ऐसी मौज दिखाई, मार लिया अब काल कठोरा

कबीर साहब का एक और शब्द है। इसका ख्याल भी मुझे आया था ये भी उसके साथ मिलता है ।

मन मस्त हुआ तब क्यों बोले
हीरा पायो गांठ गठईयो - बार बार वा क्यों खोले

वो कहते हैं, जब मन मस्त हो जाता है, ज्ञान मिल गया समझ मिल गई तो उसको बार बार क्यों खोलूं

मन मस्त कब होता है ? मस्ती की हालत में क्या होता है ? आप शराब पी लेते हैं कुछ सुध बुध नहीं रहती, तो वो सुध बुध का न रहना क्या है ? जब तुम्हारा मन इकट्ठा हो कर के महा सुन्न में या सुन्न में चला जाता है तो फिर वहां सँकल्प आदि नहीं रहते। उसको बोलते हैं मस्ती दाता दयाल का शब्द है।

मस्ती की मस्ती मस्ती हो, मस्ती में मस्ती हो,
मस्ती की दे शराब जो, मंहगी न सस्ती हो ।
होशो तमीज़ जाते रहे, सिर्फ एक घूँट से,
कोई रहे रहं न रहे, एक मस्ती हो।
कसरत का हो ख्याल न, वहदत हो गुमा,
मस्ती में मस्ती मस्ती में मस्ती की हस्ती हो।
सिर तफ़र्का का काट दूं, मस्ती में आके मैं,
हाथों में मेरे मस्ती की, तेग़ दोदस्ती हो ।
शेखो ब्राह्मन आ के पियें, पी के मस्त हों,
चाहे विरक्त हो कोई, चाहे गृहस्थी हो।
पीरेमुगां करम से पिला, मस्ती की शराब,
ओझल नज़र से जंगल वा कोहसार व वस्ती हो

ये वह अवस्था है। कबीर साहब कहते हैं जब वह

अवस्था आ जाती है, फिर वो बोलेगा क्या कह नहीं सकता ।

हलकी थी जब चढ़ी तराजू - पूरी भई तब क्यों तोले
जब वज़न (भार) ही पूरा हो गया तो फिर क्यों तोले
सुरत कलारी भइ मतवाली - मधवा पी गई बिन तोले

सुरत जो है उसको ज्ञान हो जाता है और वह अपने आप में अर्थात self में जब चली जाती है तो इतना शराब पी लिया उस ने जिस का कोई हिसाब नहीं है यानी फिर वह अपने आप में मग्न हो जाता है । न कोई इच्छा है, न अनिच्छा है न ज्ञान है न अज्ञान है न धर्म है न कर्म है । अपने आप में आप एक अवस्था आ जाती है । सँत इस को सत्त वृत्ति बोलते हैं और शांति कहते हैं । यत्र यत्र मनो गच्छती तत्र तत्र समाधिनाम् । जहां जहां उसका मन जाता है वहां वहां समाधि का आनन्द लेता है । यह आखिरी मंजिल है ।

हँसा पाए मान सरोबर, ताल तलैया क्यों डोले
तेरा साहब है घट माहीं, बाहर नैनां क्यों खोले

जब उसको ज्ञान हो जाता है कि जिस को मैं ढ़ूँढ़ता

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

था, वह मेरी अपनी ही ज़ात थी तो वह फिर बाहर आंखें क्यों खोले। वह अपने आप में मस्त रहता है।

कहें कबीर सुनो भई साधो साहब मिल गये तिल ओले

कबीर साहब कहते हैं। साधुओ, सुनो, वह मालिक जो है वो तिल यानी सहसदल कँवल के पीछे है या दूसरे शब्दों में ये है कि बात कुछ भी नहीं थी, बात बिल्कुल मामूली सी थी, वह हमको पता लग गया।

सत् सँग आप को करा दिया, आप को नहीं कराया, मैं धर्म से कहता हूँ आप को नहीं कराया। रात को मैं आप दुखी था। मैं आप इस झमेले में पड़ा रहा। मन कहीं झूझता रहा। सोता था तो कई प्रकार के आदमियों की शक्लें मेरे सामने आती थीं। चाहें गन्दी नहीं थीं मगर भिन्न भिन्न प्रकार के आदमी और बच्चे आते थे हालांकि मैं जानता था कि यह माया है मगर उसको छोड़ न सका। वह मेरे सामने से गये नहीं। घण्टा डेढ़ घण्टा इसी ख्याल में रहा, इस के पश्चात जब मुझे असलीयत का पता लगा तो मैं ने कहा कि यह तो माया का

खेल है। तो फिर मैं छोड़ के शब्द की तरफ चला गया, वहां फिर मुझे ये तकलीफ़ नहीं हुई। उस समय मेरे दिल में ख्याल आया कि यह हालत शायद सारे सत सँगियों पर गुजरती हो मेरे साथ ही नहीं ? सब के साथ गुजरती है, उन को बता जाऊँ कि यह इस से बचने का रास्ता है। मैं ऐसे बचा, कुछ ये शब्द पढ़के अपने आप को समझा लिया। मैं तो इस ख्याल से कि ये माया है काट देता हूं और इस का असर मेरे दिमाग पर नहीं रहता वरना कोई कहे कि ख्याल नहीं आते ये गलत है। सब से बड़ी बात यह है कि अपनी कमाई हक़ हलाल की रखो और अपना भोजन शुद्ध रखो।

कोई कोई आदमी है जिस को अभ्यास की इच्छा है वरना दुनियां तो अपने अपने दुख के लिए आती है। मैं तो राम को मिलने निकला था, राम क्या मिला ? आप ही नहीं रहे। राम ने क्या मिलना है।

सब को राधा स्वामी

मुझे भी उस मालिक के दर्शन की खोज थी और कबीर को भी यही खोज थी जैसा कि उनके शब्द से प्रगट है :-

सांचा साहिब एक तू, बन्दा आशिक तेरा ।। टेक ।।
निस दिन जप तुझ नाम का, पल बिसरै नाहीं ।
हर दम राख हजूर में, तू सांचा साईं ।। १ ।।
गफलत मेरी मोटि के, मोहिं कर हुशियारा ।
भगति भाव विश्वास में, देखौं दरस तुम्हारा ।। २ ।।
सिफत तुम्हारी का करौं, तुम गहिर गंभीरा ।
सूरत में मूरत वसै, सोइ निरख कबीरा ।। ३ ।।

कबीर के इस कथन 'भगति भाव विश्वास में देखौं दरस तुम्हारा' से प्रगट है कि वह सच्चे साहिब साईं या मालिक का कोई स्थूल रूप नहीं कहते। उसका कोई रूप नहीं, रंग नहीं। वह अकथ अपार अनाम है। वह हैरत (आश्चर्य) रूप अक्षरश: सत्य है। यदि उसके दर्शन कोई मन से करना चाहे तो फेल हो जायेगा। मैंने राम की, कृष्ण की, दाता

दयाल (महर्षि शिव) की मन से भक्ति की। मन का काम है कि वह एक वस्तु को बनाता है और तोड़ देता है। आप अपने मन की हालत की निरख परख करके देखो तो मेरी बात को पूरी तरह समझ जाओगे। ऋषियों ने तप किया मगर गिर गये। मैंने मन की भक्ति की गिर गया। मन की एक आवस्था सदा नहीं रहती। उसमें चंचलताई है। ऋषि विश्वामित्र मानसिक भक्त थे। मेनका अप्सरा ने छल लिया। और भी कितने ही ऋषि महात्माओं के उदाहरण हिन्दू शास्त्रों में आये हैं कि बड़ा बड़ा तप करने पर भी मन के कारण गिर गये। जो यह समझे कि मन से काम करके एक रस बना रहेगा वह गलती खायेगा, फेल होगा। मन कभी अकाश में कभी ज़मीन पर, कभी आनन्द में, कभी शोक में, कभी मोही कभी निर्मोही आदि अवस्थाओं में आता रहता है। मन का वश करना महा कठिन काम है यह मेरा अनुभव है। यही कबीर का अनुभव है जैसा कि उनके शब्द से प्रगट है :-

काहू न मन बस कीन्हा, जगत में काहू न मन बस कीन्हा ॥

सिंगी ऋषि से बन में लूटं, विषै विकार न जाने ।
पठई नार भूप दसरथ ने, पकरि अजोध्या आने ।। १ ।।

सूखे पत्र पवन भषि रहते, पारासर से ज्ञानी ।
भरमे रूप देख बनिता को, काम कन्दला जानी ।। २ ।।

सोइ सुरपति जाकी नारि षुचीती, निस दिन ही संग राखी
गौतम के घर नारि अहिल्या, निगम कहत है साखी ।।३।।

पारबती सी पतिनी जाके, ता को मन क्यों डोलैं ।
खलित भये छवि देखि मोहनी, हा हा करके बोले ।। ४ ।।

एकै नाल कँवल सुत ब्रह्मा. जग उपराज कहाये ।
कहै कबीर इक मन जीते बिन, जिव आराम न पावे ।।५।।

मैंने इस मन को जीतने को अथवा यों कहो कि यह एक अवस्था में रहे, बड़े बड़े प्रयत्न किये । जप किया, तप किया, समाधि लगाई मगर अनुभव ने सिद्ध किया कि इन कामों से सफलता नहीं मिलती और मैं मन के हाथों से तँग रहा । सोचता था कि क्या कोई जगह ऐसी है जो इस मन से ऊपर चला जाऊँ । जो लोग मन के कारण अशान्ति महसूस करते हैं उनको कहता हूं कि सत्सँग करो । यहां सत्सँग है । यहां उनको आना चाहिये जो कमी

महसूस करते हैं । कहा है :-

बिन सत्सँग विवेक न होई ।
राम कृपा बिन सुलभ न सोई ।।

सत्संग में समझ मिलती है । सच्ची समझ या सच्चा ज्ञान मिलने पर ही अशान्ति दूर हो सकती है । यहाँ समझ या ज्ञान से वाचक ज्ञान से मतलब नहीं है । जब तक मन से सम्बन्ध है तब तक कोई चाहे योगी हो, तपी हो, ध्यानी हो तब तक मन के चक्कर में आकर अशान्त रहेगा । मैं भी अशांत रहा क्यों कि मन सुख दुख, प्रसन्नता अप्रसन्नता दोनों का देने वाला है । इसलिये ऐसी अवस्था प्राप्त करो जहां द्वन्द अवस्था न हो किन्तु सदा आनन्द ही आनन्द हो । राधा स्वामी दयाल का कथन है—

सत्त पुरुष चौथे पद वासा ।
सन्तन का वहां सदा विलासा ।।

फिर यह अवस्था कैसे प्राप्त हो ? इसके लिये आसान तरीका जो मैंने समझा या अनुभव किया वह बताता हूँ । मन से तब ही अलग हो सकते हो जब अपने आप को मन से अलग समझलो । हमारा

बच्चा शरारत करता है, घायल हो जाता है, हम दुखी होते हैं। दूसरे बच्चों के मरने पर भी कोई दुख नहीं होता। यह सब मन के कारण ही होता है। इसलिए जब तक ज्ञान नहीं होता कि मैं और हूं और मेरा मन दूसरी वस्तु है अथवा यह है कि मैं मन नहीं तब तक भटकते रहोगे। तुमको इस मन से अलग करने वाला कौन है? सत ज्ञान, सच्ची समझ सच्चा विवेक। यह कौन देगा? बाहर का सतगुरु बिना सतगुरु के वह ज्ञान या समझ आ नहीं सकती क्योंकि मन की गति १४ लोक तक व्यापक है। कबीर ने तो अपने शब्दों में मन की गति का वर्णन करते हुए इसे ज़ालिम कहा है। उनका शब्द है :-

साधो यह मन है बड़ा जालिम।
जा को मन से काम परो है, तिसही है मालुम ॥१
मन कारण जो उनको छाया, तेहि छाया में अटके।
निरगुन सरगुन मन की बाजी खरे सयाने भटके ॥२
मन ही चौदह लोक बनाया, पांच तत्व गुन कीन्हें।
तीन लोक जीवन बस कीन्हें, परे न काहू चीन्हे ॥३
जो कोउ कहै हम मन को मारा, जा के रूप न रेखा।
छिन छिन में कितनों रंग लावे, जे सपनेहु नहि देखा ॥४

रसातल इकइस ब्रह्मांडा, सब पर अदल चलावै।
षट रस में भोगी मन राजा, सो कैसे कै पावै ॥५
सबके ऊपर नाम निहच्छर तहं लै मन को राखै।
तव मनकी गति जान परै, यह संत कबीर मुख भाखै ॥६

सारा संसार मन के चक्र में आया हुआ है। हम मन के हाथों नाच नाचते रहते हैं। यह संत मत जो संसार के कल्याण को आया था उसे उसके अनुयाइयों ने इसे कालमत बना दिया। मैं यों ही कबीर की हां में हां मिलाने नहीं आया किन्तु मेरा जो अनुभव है वह कबीर की बाणी से मिलता है इसलिए उस बाणी को सत्य मानता हूं।

हम अपने मन से छाया या माया के पीछे दौड़ते रहते हैं। इसका अनुभव किया। दातादयाल ने गुरु बनाकर आँखें खोलदीं। कैसे! लोगों में मेरा रूप प्रगट होता है। मैं अनजान होता हूँ। वह रूप है माया और उसकी छाया। माया कहते हैं वासना को और वासना से जो रूप प्रगट होता है वह रूप उसकी छाया है। सब लोक अपने इष्ट को मन से पूजते हैं। मगर मन की अवस्था सदा एक समान नहीं रहती। इस प्रकार की पूजा से उन्नति तो

होगी मगर वह स्थिति सदा बनी रहेगी यह असम्भव है। हम अपने अनुमान से अपने उपास्य देव का रूप बनाते हैं मगर जिसे पूजते हैं उसे जानते नहीं है। जो अपने ख्याल से अपने इष्ट को उसकी मूर्ति, उसकी फोटो, उसकी खड़ाऊँ या उसकी समाधि तक सीमित रखेगा उसके मन की शक्ति वहीं तक सीमित रहेगी।

मैं संत सतगुरु हूँ। यदि अपना कल्याण चाहते हो, माया और मन के चक्कर से निकलना चाहते हो तो किसी ऐसी वस्तु को इष्ट न बनाओ जो दृश्यमान जगत तक ही सीमित रहने वाली है। मैं खास कर उसको चाहता हूँ जो फकीर चन्द पुत्र पं० मस्तराम को गूरु मानते हैं। मैं तुमको फकीर चन्द पुत्र पं० मस्तराम के पीछे लगाने को तैयार नहीं। मेरी बाणी गुरु है। यदि मेरे वचन तुम्हारी खोपड़ी में बैठ जायें तो तुम्हारा कल्याण हो सकता है। जब तक कोई व्यक्ति मन से भक्ति करता रहता है तब तक वह माया के फंदे से निकल नहीं सकता। तुम उसे पकड़ो जो मन से परे रहता है। कहां है :-

गुरु को मानुष जानते, ते नर कहियें अन्ध ।
दुखी होंय संसार में, आगे जम का फंद ।।
गुरु किया है देह को, सततुरु चीन्हा नाहिं ।
भवसागर की धार में, फिर फिर गौता खाहिं ।।

इस अज्ञान की भक्ति का नतीजा यह है कि भारत में धार्मिक झगड़े हैं धार्मिक विरोध फैला हुआ है । राधास्वामी मत आया । राधास्वामी दयाल ने चेतावनी दी :—

तीन छोड़ चौथा पद दीन्हा ।
सत्त नाम सत्त गुरु गति चीन्हा ।।

मगर अफसोस ! राधा स्वामी पंथ वाले भी उनकी शिक्षा को भूल गये । यह तो तीन (त्रिलोकी) के चक्कर मे फँस गये । संत मत के पैरोकार इकट्ठे बैठ नहीं सकते । यदि इनको गुरु का रूप बता दिया जाय तो झगड़े खतम हो जायें ।

मैंने इस बारे में कोशिश की मगर लोग सचाई को सुनने को तैयार नहीं क्योंकि दुनियां माया, धन मान, डेरा धाम आदि के जाल में फँस गई । मैं संसार में एक खास मिशन लेकर आया हूं । मुझे

अपना काम करना है। जो चाहे कोई सुने या न सुने।

सांची बात कबीरा कहे। सब के मन से उतरा रहे॥

फिर भूल क्या है जिसके कारण लोग अज्ञान की भक्ति में फंसे हैं और मालिक के नाम पर धार्मिक झगड़े फैले हुये हैं। वह भूल है अनसमझी। सच्ची समझ या सच्चे ज्ञान का न होना। लोग मालिक को याद करते हैं। जब मालिक एक है तो फिर झगड़ा क्यों? इसलिये कि मालिक के असली रूप का पता नहीं। मालिक तुम्हारे अन्दर है। वह शब्द और प्रकाश का आधार है। सारे ब्रह्माण्ड का आधार है। वह अकाल पुरुष है। वह देह मन और प्रकाश से परे है। इसलिए जब तक अकाल पुरुष या मालिके कुल को आदर्श या आइडियल नहीं बनाओगे मालिक के दरबार में कैसे जा सकते हो। चूँकि शुरू में वहां नहीं जाया जा सकता, इसलिये सत्संग लाजिमी है। उस अवस्था में पहुंचने के लिये ऐसे सत्पुरुष का सत्संग हो जो उस अवस्था का वासी हो।

हाँ, यदि साँसारिक उन्नति चाहते हो तथा अपने देश का भला चाहते हो तो अपने ख्याल को शुभ बनाओ। तुम्हारे ख्याल से संकल्प से दूसरों का भला होगा। वह वेद मार्ग है—शुभ संकल्पमस्तु। यदि शुभ संकल्प नहीं करते तो दुनियाँ में सुख नहीं उठा सकते।

देखो! विचार, ख्याल या संकल्प में बड़ी शक्ति है। इस लिए अपने भाव व ख्याल से सबका भला चाहो। इससे तुम्हारा भी भला होगा। कभी भूलकर भी किसी को विनाशकारी (Negative) ख्याल ⊭ दो इसलिए कि तुम्हारे गलत ख्याल से दूसरे की हानि होगी। एक बार मैंने ली हांग चांग (दाता दयाल के धेवते) को गंदा कह दिया। उन्होंने कहा बच्चों को ऐसा न कहा करो।

यहां यह बता देना चाहता हूं कि राधास्वामी मत या संत मत निवृति मार्ग है जो बेदों से परे का वर्णन करता है। इस शिक्षा को ऋषियों ने और कबीर साहब सब ने गुप्त रक्खा। केवल संकेत रूप में वर्णन किया। यदि जीवन में सुख चाहते हो तो शुभ संकल्प रक्खो। इससे परे सुरत की भक्ति है, जहां से संत मत की शिक्षा शुरू होती है।

देश की अशान्ति का मूल कारण

कल यहां लायेब्रेरी में एक पत्रिका आई। उस में एक लेख था कि भारत देश की अशान्ति के तीन मूल कारण हैं। राजनैतिक नेता, साधू महात्मा और पत्रकार। मेरी आयु किसी चीज़ की तलाश में गुज़री है। मैंने प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊंगा और दाता दयाल जी महाराज ने कहा था कि शिक्षा बदल जाना। जिस दृष्टिकोण से इस पत्रिका के सम्पादक ने महात्माओं, राजनैतिक नेताओं और पत्रकारों को देश की वर्तमान अधोगति सदाचार हीनता और अशांति का कारण बताया है मैं साधारण रूप से इस के साथ सहमत हूं मगर कहा गया है :—

पात पात के सींचते बरवा गया सुखाय।
माली सींचे मूल को डाल पात फल लाये।

वह मूल या जड़ क्या है ? जड़ है प्रत्येक

इन्सान की बासना, लाख दुनियां कोशिश करे कि देश में शांति की व्यवस्था हो, ये नहीं होगा नहीं होगा और नहीं होगा। हां अस्थाई लाभ हो हो सकता है। फिर असली Root Cause क्या है ? Root Cause है इन्सान के जज़बात और जज़बात का मूल कारण हम मां बाप हैं। आजकल खुदरो सन्तान पैदा हो रही है। स्त्री पुरुष अपने स्वाद के लिए भोग करते हैं। उसका नतीजा बच्चा पेट में आ जाता है। तो जो जज़बात ख्यालात और संस्कार मां बाप के मिलने के समय होते हैं और जो ख्यालात और जज़बात जब बच्चा मां के पेट में होता है, होते हैं उन संस्कारों का असर उस बच्चे पर पड़ता है। ये मेरे निज जीवन के तजुर्बे हैं। और मनु महाराज ने भी अपनी मनु स्मृति में दूसरे शब्दों में ब्यान किया है कि जब इन्सान बच्चा पैदा करने की इच्छा से अच्छे जज़बात रखता हुआ स्त्री से सम्भोग करेगा उस का असर बच्चे पर ज़रूरी होगा। विषय सच-मुच कठिन है। आम जनता इस भेद को समझने के योग्य नहीं हैं मगर चूंकि मेरे जिम्मे जगत कल्याण की ड्यूटि है इसलिए मैं कहता हूं, कि देश में ऐसी शिक्षा होनी चाहिये जिससे लोगों

में अच्छी संतान पैदा करने का संस्कार और तरीका बताया जावे। आप ने सुना होगा तुख्म तासीर और सोहबत का असर कभी ज़ाया नहीं जाता। अगर महात्माओं और लीडरों के ये ख्याल में होता तो वर्तमान दशा जो भारत में हो रही है ये न होती।

जिस प्रकार जंगल के खुदरौ पेड़ इंधन का काम देते हैं। इसी प्रकार ये जो वर्तमान सन्तान पैदा हो रही है या हो चुकी है वह सही दिमाग वाली नहीं हो सकती, हां महात्माओं ने ज़रूर ये शिक्षा देते हुए संस्कार बताऐ हैं। जिस प्रकार पेड़ों को पैवन्द लगाई जाती है इसी प्रकार अच्छे पुरुषों, निरबन्ध पुरुषों और शान्ति प्रिय लोगों की सँगत से कुछ न कुछ लाभ ज़रूर होगा और इसी वास्ते महात्माओं ने शुद्ध बुद्धि को प्राप्त करने के लिए गायत्री मन्त्र और प्राणायाम मन्त्र बताये हैं ताकि वह अपने अन्दर प्रकाश का दर्शन करें। तब उनकी बुद्धि साफ होगी।

काश, ये मज़हब जो राम राम और खुदा खुदा करते हैं गुरु परायण होते। गुरु परायण का

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

अर्थ क्या है किसी आदमी को गुरु धारण करना गुरु मान लेना गुरु परायण होना नहीं है। बल्कि जो गुरु कहता है उसके हुक्म पर चलना गुरु परायण होना है। परन्तु आजकल यहां मजहबी दुनियां में देखो भक्ति सिखाते हैं या नाम का जाप या किसी देवता की पूजा बताते हैं। मगर जो अच्छा तरीका जीवन को बेहतर और सुखमय बनाने के लिए है वो यह नहीं है। वर्तमान नेता, महात्मा और पत्रकार वह क्यों देश के लिए हानिकारक हैं ? क्योंकि वह क्रियात्मिक नहीं हैं। सच्ची बुद्धि प्राप्त करने का तरीका यह है कि किसी आमिल और कामिल की बात को समझना और उस पर अमल करना ही असली भक्ति है।

दाता, आप ने कहा था शिक्षा बदल जाना, मैंने जो कुछ अपनी ज़िन्दगी के जाती तजुर्बे हासिल किये और दूसरे आदमी जो मुझ से मिलते रहते हैं, उनके जज्बात का अध्ययन करने के पश्चात सब से पहले "इन्सान बनो" की आवाज़ उठाई है। जब तक कोई पहले मानवता के नियमों को नहीं

अपनाता राम राम या और कोई नाम जो ज़बान से रटते हैं वो शांति और अमन नहीं ला सकते ।

फ़कीर

दयाल दर्शन

लेः कुबेर नाथ श्रीवास्तव
एडवोकेट

शाम को जब सत्संग आरम्भ हुआ तो उन्होंने मुझको अपने समीप बैठने की जगह दिलवायी और लक्ष्य के हेतु बहुत कुछ कहा जिसका मैं कुछ भी न समझ सका। इसके बाप उन्होंने कहा कि तुम सुरत शब्द योग का अभ्यास करो लक्ष्य को इसके द्वारा प्राप्त कर लोगे (यह तो मैं समझ गया) शब्द योग से देह ,मन पवित्र, मन निर्मल व आत्मा शुद्ध होने के कारण मनुष्य की इच्छा शक्ति प्रवल हो जाती है। देह व मन व आत्मा के वासना की पूर्ति होती है तथा आन्तरिक दयाल प्रगट होती है। जो कि लक्ष्य की प्राप्ति करा देता है प्रतिबन्ध यह है कि शारीरिक और मानसिक ब्रह्मचर्य का पालन स्थित रहे और किसी पूर्ण पुरुष का सत्संग करता रहे। यह सोच करने कि मुझ से हो सकेगा या नहीं। मैं तो काल लोक में हूं दयाल लोक का पाना दूर है।

'सुरत शब्द योग' का साधन करो यह सुनकर मैं पुरझा गया इसे देखकर उन्होंने कहा :—

झूठा खेले सांचा होय, सांचा खेले विरला कोय।

यह सुनकर मैं प्रसन्न हो गया। सोचा कि जब ऐसी बात है तो जो कुछ मुझ से हो सकेगा सच्चा बनकर करुंगा। लक्ष्य को प्राप्त कर लिया तो वाह वाह नहीं तो क्या परवा है। लक्ष्य की प्राप्ति होगी या नहीं इसका निर्णय मैं नहीं कर सका परन्तु उसकी प्राप्ति का विचार हमारे हृदय से निकल जाना उसी प्रकार असम्भव था जिस प्रकार खुली आंख किसी वस्तू को न देखने से विवश है। मुझे देहधारी दयाल का दर्शन तो प्राप्त हो गया जिससे अर्थ धर्म काम या मोक्ष की प्राप्ति होती है मगर विदेह धारी दयाल का दर्शन भी अभ्यास द्वारा प्राप्त हो जाये तो बात है जिनसे इन सब की तपन मिट जाती है।

मैं सुरत शब्द योग का साधन करने लगा और ज्यों-२ काल लोक के चक्करों को बेधता गया दयाल लोक के समीप पहुंचता गया और दाता दयाल का सत्संग करता रहा। राधा स्वामी नाम

से मुझे लक्ष्य की सुगन्ध तो अवश्य मिलती थी परन्तु वह सुगन्ध किस स्थान से आ रही है। इसका पता नहीं लगता था स्मरण रहे कि जब कभी दाता दयाल के पास दीन दुखिया आते थे और अपना दुख दूर करने को कहते थे उससे कहते कि वह दयाल है दया करेगा जाओ तुम्हारा काम बन जायेगा दयाल शब्द उनके मुख से सुनने पर मुझको यह मालूम हुआ कि उनका लक्ष्य दयाल है। मैं इस परिणाम पर पहुँचा कि राधा स्वामी या दयाल एक ही वस्तु है मगर दयाल शब्द से मुझे यह मालूम हूआ कि राधा स्वामी दयाल देश को कहते हैं। इसके बारे में मेरे कान में काल देश के शब्द की भनक पड़ी अब मैं सोचने लगा कि काल देश क्या है और दयाल देश क्या है मेरी खोज यह निकली कि काल देश वह है जहां लेन - देन सुख दुख दोनों हैं। दयाल देश वह है जहां लेन - देन न सुख दुख का प्रभाक्लेश मात भी नहीं हैं वह पुर्ण है।

मैं अभ्यास द्वारा घट के चक्करों को बेधता था और उसकी सैर करता था मगर दयाल देश की सुगन्ध न पाकर उनको छोड़ता रहा और काल देश

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

और दयाल देश के अन्तर के खोज में फड़ गया। दाता दयाल का निम्नांकित शब्द मेरे दृष्टि में आया।

१. पिला दे भक्ति का ऐसा प्याला
मनत्व मैं अपने मन का खो दूं ॥
न सुध रहे न बुद्ध रहे कुछ
अहं पना मैं अपने मनका खो दूं ॥
२. जपूं तपूं व भजूं न सुमरूं
न योग युक्ति के पंथ दोड़ूँ ॥
न नाम की माला हाथ में हो
हिय की माला का मन का खो दूँ ॥
३. वह राग क्या जिसमें राग आवे
वह त्याग क्या त्याग में फसावे ॥
न वंध व मुक्ति का हो खटका
विवेक घर व बन का खो दूं ॥

इस शब्द को ध्यान देने से मुझे यह मालूम हुआ कि सहस दल कवल, त्रिकुटी सुन्न-महा सुन्न व भँवर गुफा के जितने लोक हैं वह काल देश हैं। क्यों? क्योंकि वह अपने मन्डल में वृत्ति (सुरत) को अपने खेल में फंसाये रहते हैं और आला गगन से मुक्त नहीं होने देते हैं। परन्तु दयाल देश वह देश है जहां देह मन व आत्मा का प्रभाव नहीं पड़ता है। इसका अभिप्राय यह है कि अगर देह मन

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

व आत्मा में से किसी प्रकार की वासना जब उठती है तो वह दयाल देश से उसकी पूर्ति हो कर तृप्ति हो जाती है या वह लुप्त हो जाती है दोनों देशों में वह दयाल दर्शन से अप्रभावित हो जाती है और मनुष्य काल लोक के प्रभाव से बँध जाता है इसी कारण इसका नाम दयाल देश से सम्बोधित है।

एक आदमी फूस के झोंपड़े में रहता है उसको सुख दुख का मान झोंपड़े तक ही है दूसरा आदमी कच्चे मकान में रहता है उसको सुख दुख का मान कच्चे मकान तक ही है। आदमी कच्चे मकान तक ही है। चौथा आदमी ऐसा है जिसके पास झोंपड़ा तक नहीं है। वह झोंपड़ा बनाता है उसके सुख दुख से असन्तुष्ट होकर (पक्के मकान) बनाता है। उसका सुख दुख कुछ दिन भोगने के बाद उससे भी असन्तुष्ट हो जाता है। बतलाओ अब कोई क्या करे। अब कहां निवास करे। और किस को भूले मेरा उत्तर यह है कि वह ऐसे मंडल का वासी हो जाये जहां सुख दुख का प्रवेश नहीं है वह दयाल देश है।

जो मनुष्य दयाल दर्शन कर लेता है यानि दयाल

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

धाम का वासी हो जाता है वह काल देश में बास तो अवश्य करता है परन्तु काल देश का प्रभाव उस पर प्रभावित नहीं होते जैसे कमल पानी में ही जन्म लेता है और पानी उसके पत्तों पर ठहर नहीं सकता तथा पानी उसको भिगो नहीं सकता चाहें पानी कितना भी ऊपर बढ़ता जाये वह सदैव उसके ऊपर रहेगा ।

अब मुझे पता चलता है कि मनुष्य दयाल देश का वासी है, मौज से काल देश में आया है और इसमें फंस गया है । दयाल की दया होती है वह काल देश से मनुष्य को निकाल कर दयाल देश में प्रवेश करा देते हैं और मनुष्य को देह मन व आत्मा के तपन से रहित करा कर सदैव के लिए अपने चरण शरण में वासा करा देते हैं ।

अगर तुमने इसको ध्यान पूर्वक पढ़ कर समझने का प्रयास किया तो दाता दयाल अवश्य तुम्हारा कल्याण करेंगे ।

राधा स्वामी

—o—

चौपाई

ले० दुर्गा दास "चमन"

1. चाहे कोई मोक्ष द्वारा, ढूंढे पूर्ण पुरुष न्यारा।
2. सत्य पुरुष का पार अपारा, तीन गुणों से है वह न्यारा।
3. कर्ता पन का दोष न लागे, जां को सत्य का सत्संग भावे।
4. मैं और तू का भेद न जाने, जब तक सन्त को सत्य न माने।
5. मैं को छोड़ करे सत्संग, होगा तब कर्ता पन भङ्गा।
6. अहं भाव को जन छोड़े, तीन गुणों को सत्य में जोड़े।
7. सत्य भाव में हुकम जो माना, उस मानुष का मोक्ष ठिकाना।
8. मैं कुछ साधन भजन न जानु, परम पुरुष की आज्ञा मानु।
9. सारे शब्द है पुरुष के रूपा, कौन सत्य और कौन है झूठा।
10. कैसे छान्टु आप बताओ, सत्य पुरुष के हुकम में आओ।
11. मौज से है ब्रह्मण्ड रचाया, कर्ता पन में काल कहाया।
12. कर्तापन से अहं का बासी, सृष्टि है कर्ता अभिलाषी।
3. जिस मानुष में अहं न आवे, जीवनमुक्त वह पुरूष कहावे।
14. "चमन" को है उसने समझाया, हुकम यहां है सब पर छाया।
15. मौज तेरी में हैं सबकाजा, जो जाने वह हैं बड़ भागा।

मेरी करबद्ध प्रार्थना

भारत वासियो ! बचपन से किसी चीज़ की तलाश थी, जिस को मैं मालिक या राम समझता था, मौज एक दृष्य द्वारा सन् १९०५ ईसवी में हजूर दाता दयाल महर्षि शिव ब्रत लाल जी महाराज के चरणों में ले गई। उन्होंने सन्तमत दिया। इस सन्तमत के समझने में या जिस चीज़ की तलाश थी उसको पाने में तिरानवें साल का हो गया। अब वह चीज़ क्या निकली ? वह एक अवस्था है जहां मैं अपनी हस्ती को, हैपने को भूल जाता हूं। जो कुछ बाकी रह जाता है उसको ब्यान करने के लिये शब्द नहीं मिलते। बस यह मिला मुझे।

क्योंकि हजूर दाता दयाल जी महाराज ने मेरे जिम्मे निबल, अबल: अज्ञानी जीवों की सहायता, जगत कल्याण और साथ ही जीवों को भव सागर से पार करने का काम लगाया था जिसे आज उनतालीस

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

साल से करता हुआ चला आ रहा हूं, मैंने जो काम किया यह मेरे निज अनुभव के आधार पर है अथवा आप बीती को सामने रखते हुए किया।

गुरु आज्ञा का पालन करने के सिलसिले में मैंने मानवता मन्दिर की नींव रखी। जो कुछ मैंने कहा वह पुस्तकों अथवा मानव मन्दिर पत्रिका के रूप में आजकल प्रकाशत होता है। ब्राह्मण होने के नाते जो प्रकाशत मन्दिर से होता है उसका मूल्य नहीं रखा क्योंकि ब्राह्मण के लिये वेद बेचना पाप है, वेद नाम है ज्ञान का। पुस्तकें बड़ी होती हैं और दिन प्रति दिन मांग बड़ रही हैं। इस लिये मैं हाथ बांध कर कहूंगा कि जिन सज्जनों को मेरे अनुभव से सहमति न हो यूहिं किताबें मंगवाकर, क्योंकि ये मुफ्त मिलती हैं, मंन्दिर की हानी न करें।

अब किताबें अंग्रेजी और पंजाबी भाषा में भी मिलती हैं जोकि निम्नलिखित हैं।

ਪੰਜਾਬੀ ਕਤਾਬਾਂ ਦੀ ਸੂਚੀ

1. ਪੰਜ ਨਾਮ ਦੀ ਵਿਗਿਆਨਕ ਵਿਆਖਿਆ। 2. ਅਨੁਭਵ ਦਾ ਨਿਚੋੜ ਮਾਨਵਤਾ। 3. ਸਚਾਈ ਦਾ ਨਿਚੋੜ। 4. ਮਾਨਵਤਾ 5. ਮਾਨਵ ਕਲਿਆਨ। 6. ਸੱਚਾ ਧਰਮ ਮਾਨਵਤਾ।

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

अंग्रेजी भाषा में साहित्य

1. A Word to Americans.
2. A Word to Canadians.
3. Manvata the true religion.
4. Religious Research.
5. Weight of Soul.
6. Truth Always Wins.
7. Essence of Truth
8. Science of God Realization.
9. True Sanatan Dharma or True Religion of Humanity.
10. Jeewan Mukti.
11. Art of happy livinig.
12. Key to Freedom.
13. Broadcast of Reality in America.

जिन को जरूरत हो वह मंगवा सकते हैं हम विना मूल्य भेज देंगे। मगर यह मुफ्त का काम कब तक चलेगा ? इस लिए जो सज्जन यह समझते हैं कि जो कुछ मैंने इन किताबों में लिखा है इस में कुछ सच्चाई है, इस पर आचरण करने से इन्सान का पारिवारिक, समाजिक और आत्मिक जीवन सुधर कर निर्वाण को प्राप्त हो सकता है तो यथा शक्ति मन्दिर की सहायता करें ताकि यह सब काम जारी रखा जा सके।

सरकार के आयकर के नियमानुसार ट्रस्ट वालों की साल में जितनी आय अथवा दान आता है वह

उसी साल में खर्च करना पड़ता है इसलिए मैंने जनता, विशेष कर गरीब रोगियों के इलाज में सहायता करने के लिए तीन हस्पताल एलोपैथिक, डेन्टल व होमियोपैथिक खोले हुए हैं मगर मुसीबत यह है कि बजाय गरीबों के अमीर आदमी अधिकतर इलाज कराने के लिए आते हैं। इसलिए अगर कोई सज्जन इस काम में सहायता करना चाहता है तो करे मगर यह बिनती अवश्य करूंगा कि जो धनी लोग हैं वह यहां हस्पताल से मुफ्त दवाई न लें।

भारत वासियो ! मैंने जो कुछ किया निज स्वार्थ या संत मत के पक्ष में इसे सच्चा सिद्ध करने के लिए नही किया। मालिक के मिलने की तलाश थी जिस को हम ईश्वर परमेश्वर समझते थे। मेरा भाग्य अथवा दुर्भाग्य इस संतमत या राधास्वामी मत में लाया। यहां इन संतों ने तमाम धर्मों, वेदान्त या सूफीयत तक का भी खण्डन किया हुआ है। आत्मा खण्डनसहन नहीं कर सकती थी इसलिये प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊंगा। दाता दयाल जी महाराज ने काम दिया था। तुम ही सोचो राधा स्वामी मत वालों की किताबों में संतों

की इतनी बड़ाई लिखी हुई है कि वह ईश्वर, परमेश्वर के पैदा करने वाले हैं, बस इसी एक राज़ को जानने के लिए मैंने अपना जीवन खो दिया कि संतमत वालों के पास क्या चीज़ है जो ईश्वर और परमेश्वर को भी पैदा करने वाले समझते हैं। दाता दयाल जी महाराज पर से मेरा विश्वास तो नहीं टूटा मगर बाणी भेद नहीं देती थी। इसलिये प्रण किया था कि जो समझ में आयेगा बता जाऊंगा और दाता जी ने कहा था कि शिक्षा बदल जाना। हज़ूर बाबा सावन सिंह जी महाराज ने भी हुक्म दिया था कि निर्भय हो कर काम कर जाना, सो कर चला मेरा निज अनुभव है कि संत बनना कोई सरल काम नहीं है। मुझ पर समय समय पर संतपने की हालत तारी होती है, चौबीस घण्टे नहीं। अब यह प्रार्थना है कि संसार मेरे लिए सदा के लिए लोप हो जायें और अपनी हस्ती खो कर ज़ात में समा जाऊं मगर यह उसकी इच्छा है।

—फकीर

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

Regd. No. 26265/74 NOVEMBER 10th 197
MANAV MANDIR NW—HSP—7.

ADDRESS

To 1283 Sh. A. Hanmanth Rao
H. No. 10-3-194/8
Humayun Nagar,
Hyderabad 28 A.P.
500028

From :

MANAVTA MANDIR
SUTEHRI ROAD,
HOSHIARPUR.

Phone : 2022